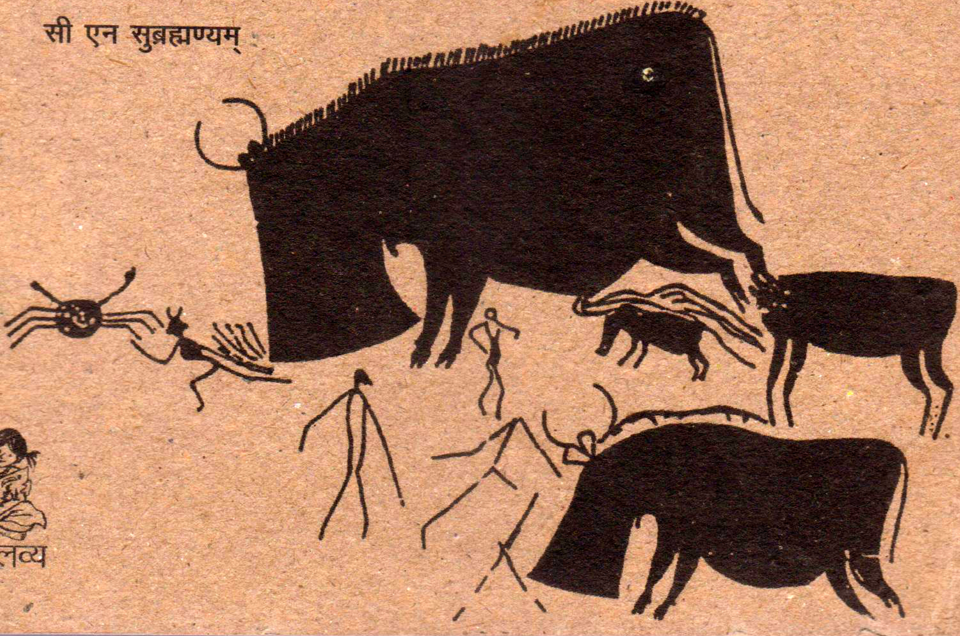
जब पुरुषों ने किया शिकार, तब महिलाओं ने क्या किया?

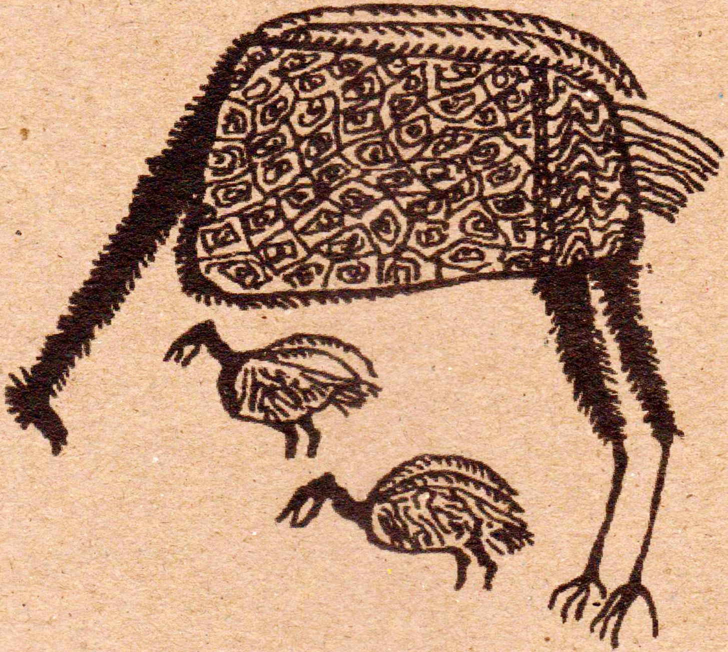
सी एन सुब्रह्मण्यम्



एकलव्य



एक बार की बात है। मेरे दो दोस्त – मुकुल, शकीला और मैं, हम तीनों भोपाल के पास काथोटिया के जंगल में घूम रहे थे। मुझे तलाश थी चट्टानों पर बने चित्रों की और मेरे मित्रों को अजीबोगरीब पक्षियों को ढूँढने का शौक था। इस बार उन्हें कोई नया पक्षी तो देखने को नहीं मिला, लेकिन मैंने उन्हें एक अजीब से पक्षी का चित्र ज़रूर दिखाया। यह चित्र वहाँ की एक चट्टान पर बना था।



मैंने उनसे पूछा, "भई यह कौन-सा पक्षी है?"

"अरे यह तो शुतुरमुर्ग है! मगर यह यहाँ कैसे आया? ये तो अफ्रीका में ही पाया जाता है।"

मैंने कहा, "हो सकता है कि हज़ारों साल पहले यह इस इलाके में भी रहता होगा। फिर किसी कारण से धीरे-धीरे खत्म हो गया हो। ऐसे अन्य बहुत सारे जानवर और पंक्षी खत्म हो चुके हैं।"

घूमते-घूमते हम थक गए थे। भूख भी लग रही थी। हम पूड़ी और आलू की सब्ज़ी लाए थे। एक झरने के किनारे बैठकर खाने लगे।

बातों-बातों में मुकुल ने पूछा, "जिन लोगों ने चट्टानों पर ये चित्र बनाए हैं, वे इस जंगल में क्या खाते होंगे?"



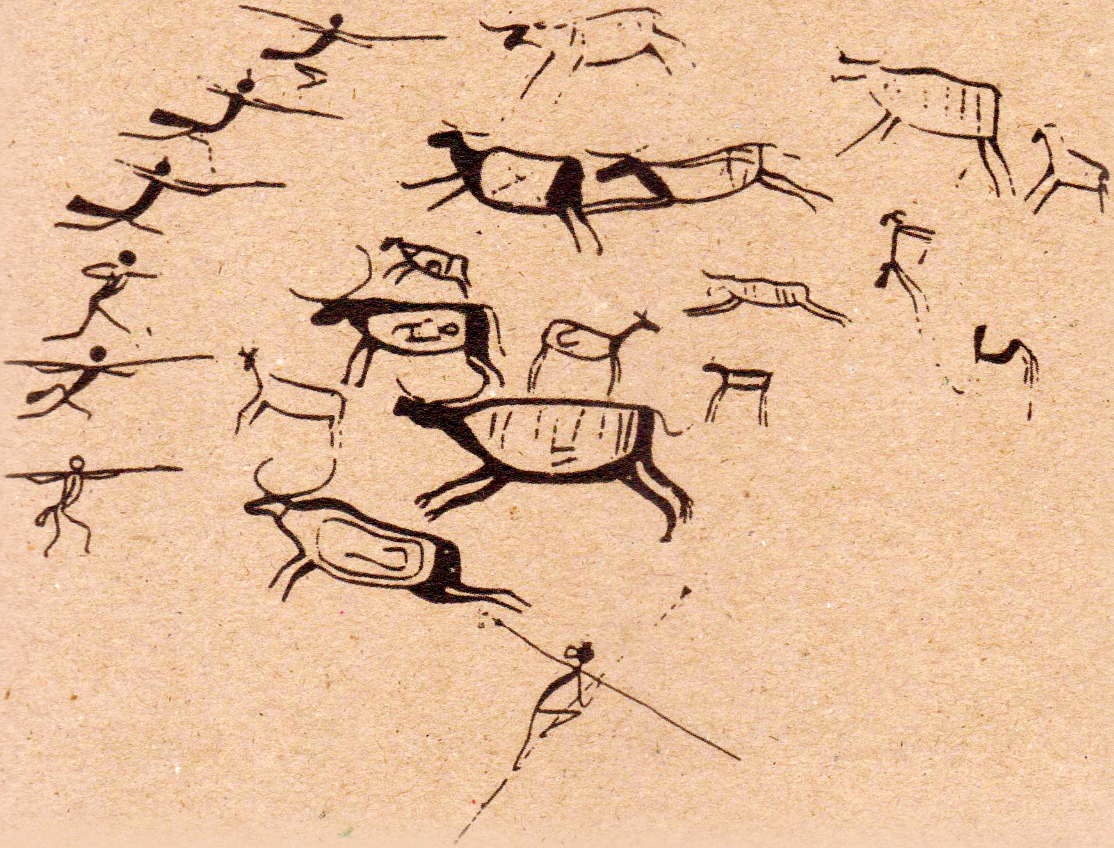
मैंने कहा, "वे खेती-बाड़ी तो करने से रहे। जानवरों का शिकार करके ही खाते होंगे। वैसे भी उनके चित्रों में शिकार की बातें काफी देखने को मिलती हैं। तीर-कमान, लकड़ी और पत्थर के भाले आदि से ही करते होंगे शिकार।"

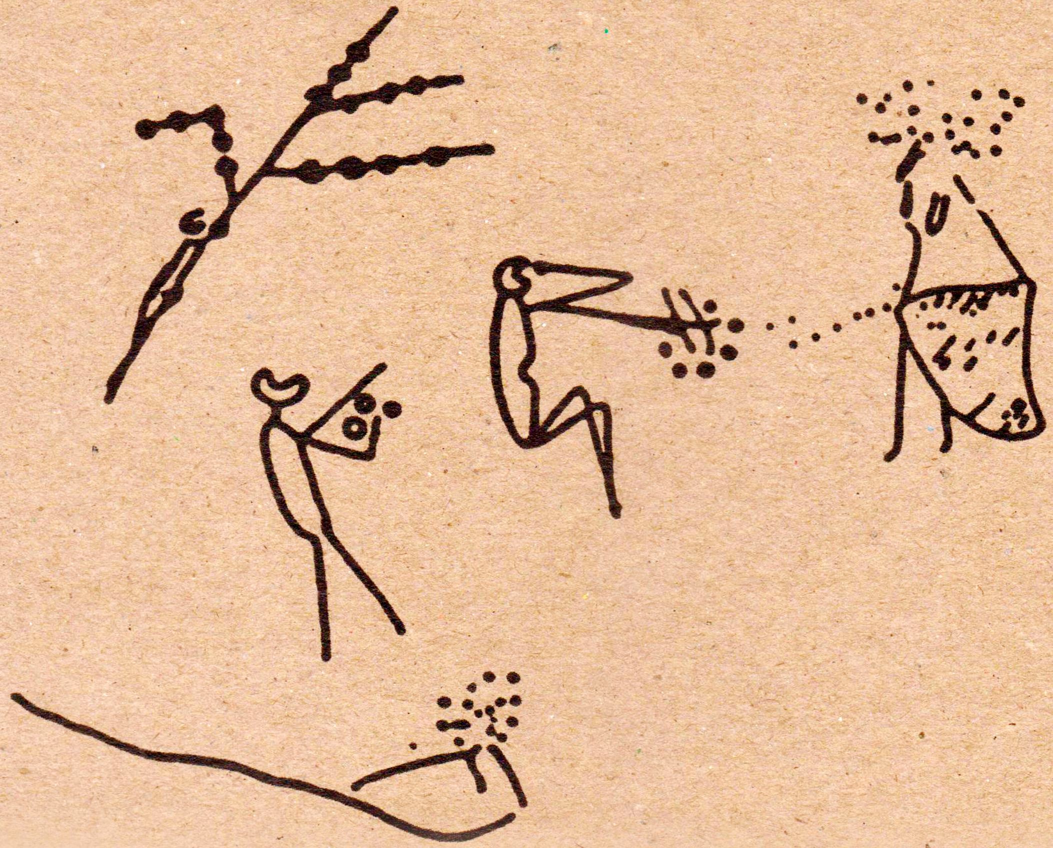
मुकुल ने पूछा, "कौन करता होगा शिकार, महिला या पुरुष?"

शकीला बोली, "भई, जानवरों का शिकार तो शायद पुरुषों का ही काम रहा होगा।"

"तो फिर स्त्रियाँ क्या करती होंगी? उनका कोई चित्र नहीं देखा तुमने?" मुकुल पूछ बैठा।

मैं सोच में पड़ गया। हज़ारों साल पहले जंगलों में महिलाएँ क्या करती होंगी?



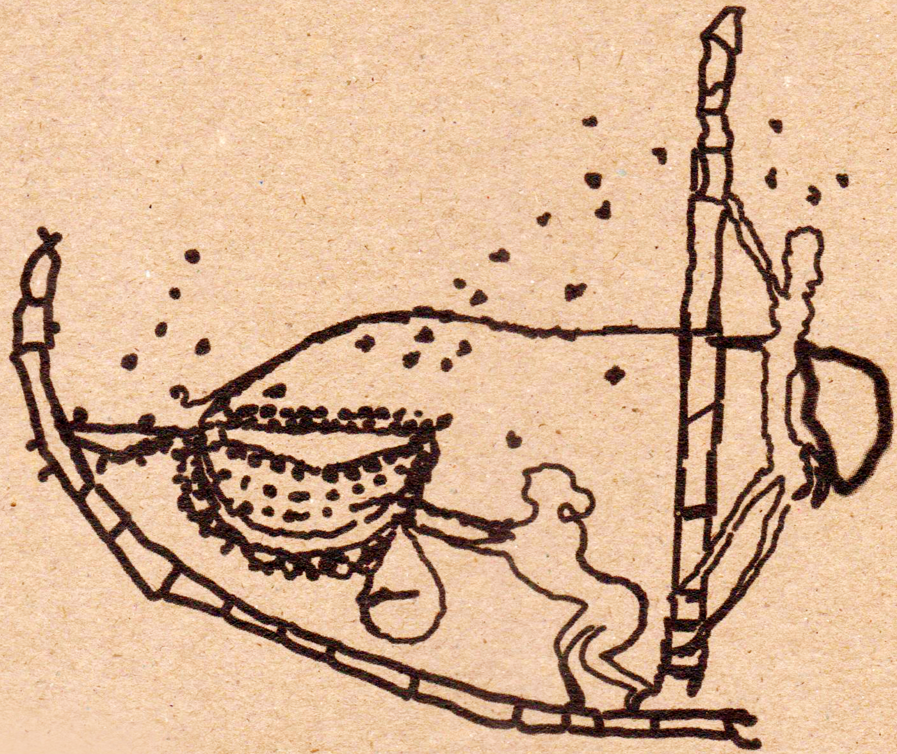


मुकुल फिर बोला, "यार, इतना घना जंगल है, इतने पेड़-पौधे हैं, इनका उपयोग भी तो करते होंगे। नदी हैं, नाले हैं, पानी के गड्ढे हैं, इनमें मछली नहीं मारते होंगे? क्या ऐसा कोई चित्र नहीं मिला?"

बाद में भी मैं इसके बारे में सोचता रहा। जानवरों के शिकार के अलावा वे और क्या-क्या करते होंगे? कई दिनों बाद मुझे कुछ और चित्र देखने को मिले। तुम भी इन्हें देखो और बताओ कि वे और क्या-क्या करते होंगे?

भीमबेठका की एक गुफा में बना यह चित्र देखो। इसमें एक व्यक्ति (शायद औरत है) पेड़ पर चढ़कर फल तोड़ रही है। दो लोग नीचे फल खा रहे हैं।

पचमढ़ी में महादेव पहाड़ी की गुफा पर बने इस चित्र को जब मैंने देखा, एकदम तो मुझे भी समझ नहीं आया, कि इस चित्र में क्या हो रहा है? थोड़ी देर बाद वहाँ घूमती हुई एक लड़की से मैंने पूछा। लड़की ने गौर से चित्र देखा और बोली, "जे बाईयाँ मधुमक्खी के छत्ते तोड़ रही हैं।" मुझे आश्चर्य तो हुआ कि इस लड़की ने इतने आराम से बता दिया और मैं पहचान ही नहीं पा रहा था। तुम भी इसे ध्यान से देखो - रस्सी की बनी सीढ़ी में चढ़कर ये लोग एक पेड़ या चट्टान से छत्ते तोड़ रहे हैं। आसपास चारों तरफ मधुमक्खियाँ उड़ रही हैं। उस लड़की ने यह भी बताया कि वह और उसका भाई भी इसी तरह छत्ते तोड़कर शहद इकट्ठा करते और बेचते हैं।





यह चित्र लाखाजाबर नाम की जगह में बना हुआ है। तालाब से मछली, केकड़े या कछुए पकड़ने के दृश्य हैं इसमें। कितने अलग-अलग तरीकों से पकड़ रहे हैं ये लोग! कोई हाथ से, कोई जाल से, तो कोई तीर से।



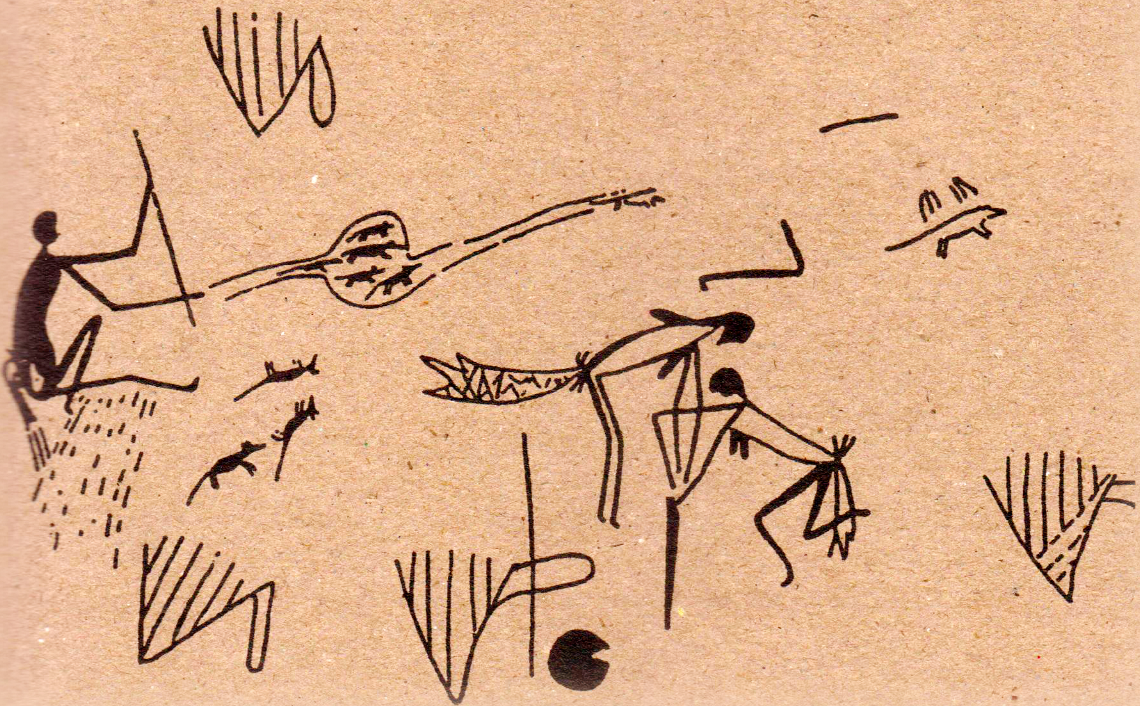
काथोटिया में बने इस चित्र को देखो। शायद एक औरत सिलबट्टे पर कुछ पीस रही है - हो सकता है जंगली अनाज या बीज हों!

यह चित्र मैंने औबेदुल्लागंज के पास जाओरा में देखा था। इसमें कुछ महिलाएँ चूहे पकड़ रही हैं। कुछ महिलाएँ चूहों के बिलों को लकड़ी से खोदकर, उन्हें मार रही हैं। पास में तीन चूहे मरे हुए पड़े हैं। कुछ टोकरियाँ भी रखी हैं, शायद चूहे पकड़कर ले जाने के लिए। मज़े की बात यह है कि चूहे बिल के दूसरे छेद से निकलकर भाग रहे हैं।

इन चित्रों को देखकर मुझे शकीला की याद ज़रूर आती है। न जाने अभी वो कहाँ होगी। शायद वह भी कभी इस किताब को देखेगी। तुम अगर शकीला से कहीं मिलो तो ज़रूर बताना उसे कि हज़ारों साल पहले औरतें क्या-क्या करती थीं।

ऐसा नहीं था कि पुरुष शिकार करके लाते और महिलाएँ सिर्फ घर-बार सम्हालतीं! वे भी पेड़ों पर चढ़कर फल या शहद के छत्ते तोड़ती थीं, खरगोश या चूहे जैसे जानवरों का शिकार करती थीं। औरतें पेड़-पौधों को भी करीब से जानती थीं। वे ही तो फल तोड़ती थीं, कन्दमूल खोद लाती थीं, बीज बटोरती थीं। इसीलिए कई लोगों का कहना है कि पौधों को उगाना (यानी खेती करना) भी महिलाओं ने ही शुरू किया होगा।





जिस तरह शायद औरतों ने फल बटोरते हुए, पेड़ों और पौधों के बारे में जानकारी हासिल की, उसी तरह पुरुषों ने भी जानवरों का शिकार करते हुए जानवरों के बारे में बहुत कुछ पता लगाया होगा।

बाजू वाले पेज वाला चित्र काथोटिया में बना है। इस चित्र में हिरण या साँभर के पूरे पाचन तंत्र का चित्रण है। ऐसा लगता है कि चित्रकार ने हिरण की आन्तरिक रचना को पूरा खोलकर देखा है। यहाँ तक कि पेट के अन्दर अधपचा भोजन दिख रहा है। इससे पता चलता है कि उनके पास हर जानकारी कितनी गहराई तक थी।





जब पुरुषों ने किया शिकार, तब महिलाओं ने क्या किया?/ JAB PURUSHON NE KIYA SHIKAR, TAB MAHILAON NE KYA KIYA?

आलेखः सी एन सुब्रह्मण्यम्

चित्रः विभिन्न स्रोतों से साभार / हाशिए के चित्रः प्रज्ञा शंकरन्

डिज़ाइनः कनक शशि

अगस्त 2017/ 3000 प्रतियाँ

कागज़ः 140 **gsm** ब्राउन क्राफ्ट पेपर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-33-4

मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी,

शिवाजी नगर, भोपाल - 462 016 (मप्र)

फोनः +91 755 255 0976, 267 1017

www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, प्रा लि, भोपाल (मप्र) + 91 755 268 7589



शैल चित्रों के ज़रिए पाषाणकाल की महिलाओं के कामों की रोचक पड़ताल।

सी एन सुब्रह्मण्यम्
एकलव्य के सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम से जुड़े हैं। इतिहास सम्बन्धी विषयों पर लिखने में रुचि।

एकलव्य

मूल्य: ₹ 20.00

parag
AN INITIATIVE OF
TATA TRUSTS

9 789385 236334